परमानंद झा शास्त्री : व्यक्तित्व ओ कृतित्व

शिव कुमार मिश्र

परमानंद झा शास्त्री किंवा आचार्य परमानन्दन शास्त्रीक स्वरूप आ हुनक स्मृतिक प्रतीक हुनकर आवासक ध्वंशावशेष देखि हम ई विचारऽ लगैत छी जे सरस्वतीक एहि वरदपुत्रक कोन एहन अपराध छलनि जे माता लक्ष्मी हिनकासँ एतेक शत्रुता उतारि रहलि छथिन। ढहल-ढनमनायल पजेबाक देबालक ऊपर फुटल-फाटल खपड़ाक छारनि, ताहूमे पन्नीसँ चनबा जकाँ टाँङल, जे पानिक बुन्नसँ रक्षा करैत छलनि। ओहि घरक ओसारामे कुर्सीपर बैसि कोनो पोथी वा समाचारपत्र पढ़ैत पजेबासँ बनल खिड़कीक भूर बाटे सभ दिन देखबामे अबैत छलाह। आब ओहो खपड़ासभ खसि पड़ल, मात्र देबालक भग्नावशेष ठाढ़ अछि। खपड़ाक बदला कतहु-कतहु पन्नी टाँङल अछि जाहिपर पजेबाक टुकड़ीसँ दाबनि पड़ल अछि जे पन्नी बसातमे उड़ि ने जाय। एहि तरहेँ देखैत छी जे हुनक स्वर्गवासक प्रंद्रह वर्षक बादहुँ माता लक्ष्मीक निर्ममता कम नहि भेलनि अछि।

मिथिलाक वरदपुत्र महापंडित आचार्य परमानंदन शास्त्री अर्थात चुटकुलानंदजीक व्यक्तित्व एकटा वरिष्ठ पत्रकारक अतिरिक्त प्रकाण्ड पंडित, प्रख्यात समालोचक, गंभीर शोधार्थी, लिपिविशेषज्ञ, साहित्यकार, इतिहासकार, पुरातत्वविद, तंत्र विशेषज्ञ, आयुर्वेदिक चिकित्सक, होमियोपैथिक चिकित्सक, दर्शनशास्त्रक मर्मज्ञ, ज्योतिर्विद, व्यंग्यकार, कवि प्रभृति विलक्षण प्रतिभासँ भरल-पुरल छल। हुनक जन्म मुजफ्फरपुर जिलाक चिकौटा गाममे 15 मइ 1915 इ. मे महामहोपाध्याय पं. लालजी झाक पौत्र आ पं. राधाकांत झाक पुत्रक रूपमे भेलनि। जखन ओ दू वर्षक छलाह तँ हुनक पिताक देहावसान भऽ गेलनि, तथापि ओ तेहन मेधावी छलाह जे सात वर्षक अवस्थामे अपन पितामहकेँ संपूर्ण भागवत पुराण पढ़िकऽ सुना देलनि। आरंभिक शिक्षा विक्रम संस्कृत मध्य विद्यालय चिकनौटामे पिती विद्याभूषण पंडित अनिरुद्ध झाक सान्निध्यमे भेलनि। विद्यालयी शिक्षाक पश्चात् शास्त्रीजी क्वींस कालेज वारणसीसँ उच्च श्रेणीमे व्याकरणाचार्यक परीक्षा उतीर्ण भेलाह। शिक्षा साधनाकेँ आगू बढ़बैत

1937 इ. मे सांख्ययोगाचार्यक योग्यता लेल 1938 इ. मे बिहार संस्कृत समितिसँ स्वर्णपदक प्राप्त कयलनि आ 1939 मे न्यायवैशेषिक योग्यता प्राप्त कयलनि। पुनः 1940 इ. मे साहित्याचार्यक उपाधि प्राप्त कयलनि। अंग्रेजी, फ्रेंच, बंगला, उर्दू, पालि, संस्कृत, तमिल, जर्मन, प्राकृत जापानी, तिब्बती, चीनी, तिरहुता, ब्राह्मी, नेवारी प्रभृति भाषा ओ लिपिक हुनकामे अपूर्व ज्ञान छल।

शास्त्रीजीक जीवनक आंरभिक कालक विषयमे कहल जाइछ जे जखन ओ सर्वप्रथम 1943 इ मे इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ इंडियन कल्चर, लाहौरमे निदेशकक सहायक पदपर नियुक्त भेलाह तखन मात्र चारि घंटाक सेवासँ ओहन अद्भुत प्रतिभा देखौलनि जे सहायकसँ सहायक निदेशक बना देल गेलाह, मुदा देश विभाजनसँ खिन्न भऽ लाहौर छोड़ि 1947 मे शास्त्रीजी स्वदेश चलि अयलाह।

लाहौर जयबासँ पहिने हुनक विवाह मधुबनी जिलाक अवाम गामक सोति परिवारमे भेल छलनि। हुनक ससुर दरंभगा महाराजक कुटुम्ब छलाह। एकबेर हुनक स्त्री गाममे दुखित पड़ि गेलथिन जनिका लाहौर पठाओल गेलनि। एक दिन कार्यालय गेल रहथि ताही काल हुनक स्त्री स्वर्गवासी भऽ गेलथिन। आपस अयलापर स्त्रीकेँ अस्पताल लऽ गेलाह जतऽ मृत घोषित कऽ देल गेलनि। ओहि पक्षमे कोनो सन्तान नहि रहनि। लाहौरसँ घुरि गाम अयलापर दोसर विवाह कोइलखमे भेलनि जाहिमे छओ टा संतान, दू टा कन्या आ चारि टा बालक भेलनि। जेठ बालक कुलानंद झा पटना उच्च न्यायालयक अधिवक्ता, दोसर रुद्रानंद मुजफ्फरपुरमे शिक्षक, तेसर मेधानन्द ज्योतिषी आ सर्वोदय डायरीक सम्पादक आ चारिम सच्चिदानंद, मुजफ्फरपुरमे शिक्षक छथि। स्त्री अन्दे देवी पछिला साल दीयावातीक दिन स्वर्गवासी भऽ गेलथिन।

शास्त्रीजी अपन छात्र जीवनमे प्रखर राष्ट्रवादी छलाह। ब्रिटिश कालमे हुनका विरुद्ध राजद्रोहक मोकदमा चलओल गेल छल। पंडित मदन मोहन मालवीय आ डॉ. रघुवीरक सान्निध्य हुनका भेटलनि। डॉ. रघुवीर द्वारा हिन्दी कोषक रचनामे हिनक महत्त्वपूर्ण योगदान रहलनि। डॉ. सर कामेश्वर सिंह हिनक प्रतिभासँ प्रभावित भऽ *आर्यावर्त्तक* उपसम्पादक पदपर नियुक्त कयलनि। 1957 सँ 1978 धरि आर्यावर्त्तक 'चुटकुलानंद की चिट्ठी' नामक व्यंग्य स्तम्भक नित्य रचना कयलनि। जे जन-जनमे बऽ लोकप्रिय भेल। *मंजू भाषिणी कोष* (संस्कृत), *वीर भारत* (उर्दू), *मिथिला मिहिर* (मैथिली), *उतर बिहार* (हिन्दी साप्तहिक), *कल्याण, इंडियन नेशन, नर-नारायण, सारस्वती सुषमा* प्रभृति पत्र-पत्रिकामे लेखन आ सम्पादन कार्यसँ जुटल रहलाह तँ राष्ट्रभाषा परिषदक परिषद पत्रिका, बिहर रिसर्च सोसाइटीक 'जर्नल ऑफ दि बिहार रिसर्च सोसाइटी', मैथिली अकादमीक पत्रिका प्रभृति शोध पत्रिकासँ सेहो अपन शोध आलेखक माध्यमसँ सम्बद्ध रहलाह।

पत्रिकारिता जगतमे शास्त्रीजी व्यंग्य लेखनक बेताज बादशाहक रूपमे चुटकुलानंदजीक नामसँ विख्यात रहलाह। अपन लेखनीक व्यंग्यवाणसँ तत्कालीन राजनैतिक, सामजिक, आर्थिक आ प्रशासनिक व्यवस्थापर नित्य चोट करैत रहलाह। किछु बानगी देखल जा सकैछ, दिनांक 1 अक्टूबर 1970 इ. कैं *आर्यावर्त्तक* 'चुटकुललानंद की चिट्ठी'मे लिखैत छथि– रहिमन चुप ह्वै बैठिए देख दिनन के फेर', अजी सम्पादक जी महाराज, जय आर्यावर्त्त की। आगे आपने तो सुना ही होगा कि केन्द्रीय गुप्तचर व्यूरो ने बिहार के तीन भूतपूर्व मंत्रियों के घरों की तलाशी की है। सच कहता हूँ सम्पादक जी इस समाचार से बाबा आश्चर्य के मारे दातों तले अंगुली के बदले पूरा पहुंचा दबाए बैठे हैं। भला बताइए तो सम्पादक जी अगर इसी तरह गड़े मुर्दे उखाड़े जाते रहे तो भविष्य में मंत्रीगिरी के प्रति लोगो का आकर्षण क्या बच जायगा? अब तक बाबा समझते थे कि मंत्री का पद ऐसा है कि जो चाहे करे उसको रोक-टोक देख रेख करने वाला कोई नहीं है। गोस्वामी तुलसी दास जी के शब्दों में–

परम स्वतंत्र न सिर पर कोऊ।
भावे मनहि करह तुम सोऊ।।

आगू लिखैत छथि– अगर बाबा भूतपूर्व मंत्री होते और बाबा के घर की तलाशी हुई होती तो बाबा अपने चेले-चाटियों को जरूर यह उपदेश देता–

जो मैं ऐसा जानता
मंत्री को दुःख होय।
नगर ढ़िढोरा पीटता
मत मंत्री बन कोय।।

आगू लिखैत छथि जे 'बाबा के चेले -चाटी मंत्री बनते हैं तो बाबा उन्हें उपदेश देना कर्तव्य समझते रहे हैं कि–

मौका आया हाथ में
लूट सके सो लूट।
अन्त काल पछताएगा
कुर्सी जइहें छूट।।

फिलहाल जिन भूतपूर्व मंत्रियों के खिलाफ छानबीन चल रही है बाबा उन्हें यही कहकर तसल्ली देंगे–

रहिमन चुप ह्वै बैठिये
देखि दिनन के फेर।
जब नीको दिन आविहें
बनत न लगिहें देर।।

एहिना दू अक्टूबर 1970 केँ 'लोक तंत्र से भी बड़ा होता अफसर तन्त्र' शीर्षकसँ अफसरशाहीक तत्कालीन बढ़ैत प्रभावपर व्यंग्य कयलनि आ कतेको कविता आ गीतक तुकबंदीसँ अफसरशाहीपर चोट कियलनि। तहिना 3 अक्टूबरकेँ 'महगाई ज्यों बढ़े मंहगी बढ़ती जाय' शीर्षकमे तत्कालीन समाजमे बढ़ैत महगी आ ओकर समाजपर पड़ऽवला कुप्रभावपर व्यंग्यक माध्यमसँ खूब चोट कयलनि। एहि तरहँ नित्य अपन व्यंग्यक माध्यमसँ तत्कालीन व्यवस्थाकेँ लोकक समक्ष रखैत रहलाह आ पाठकलोकनिकेँ गुदगुदबैत रहलाह। एहिना हिंदी दैनिक *प्रदीप* मे मूर्ख माढव्य, *भारत मेलमे* घोंचू पहलवान *मिथिला मिहिरमे* गोनू झा आ *उत्तर बिहार* साप्ताहिकमे मूर्ख माढव्य चिकनौटवीक माध्यमसँ समसामयिक विषय सभपर कटाक्ष आ व्यंग्य करैत अपन तर्कपूर्ण संदेश आम जनताक समक्ष रखैत रहलाह। बिहारक राजनैतिक, सामजिक आ आर्थिक इतिहास लेखनक लेल हुनक व्यंग्यपूर्ण आलेख एक टा महत्त्वपूर्ण शोध सामग्री आछि।

शास्त्रीजी एकटा नीक ज्योतिषी सेहो छलाह। *इंडियन नेशनमे* रविदिन अंतिम पृष्ठपर ज्योतिषीय स्तम्भ What the stars for tell लिखैत छलाह। टीपणि देखयबाक लेल दूर-दूरसँ लोक हुनका लग अबैत छलथिन। पटनाक बोरिंग रोड चौरहापर एकटा ज्योतिष केन्द्रमे किछु दिन धरि नियमित रूपसँ ओ बैसैत छलाह, जतऽ दूर-दूरसँ लोक अपन भविष्य एवं आन समस्याक विषयमे परामर्श लेबाक लेल अबैत छलाह। एहि विद्याकेँ आगू बढ़यबाक लेल मिथिलांचलीय पंचांगयुक्त सर्वोदय डायरीक चालीस अंक प्रकाशित करौलनि। एकर प्रकाशन बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ मुजफ्फरपुर द्वारा एखनहुँ भऽ रहल अछि। एखन एहि डायरीक संपादक हुनक पुत्र मेधानंद झा आ कुलानंद झा करैत छथि।

शास्त्रीजी एकटा बड़ पैघ लिपिशास्त्र विशेषज्ञ छलाह। लिपिक उद्‌भव आ विकासक सम्बंधमे 1960 इस्वीक 11, 18 आ 25 सिंतबर, 2 आ 9 अक्टूबर, 13, 20 आ 27 नवम्बर 4 आ 11 दिसंबरक *मिथिला मिहिरमे* हुनक आलेख छपल छल, जाहिमे विस्तारसँ एहि विषयपर चर्चा कयने छथि। ओ जखन बिहार रिसर्च सोसाइटी अबैत छलाह तँ उपस्थित शोधार्थीलोकनिसँ विविध प्रकारक भाषा आ लिपिक चर्चा करैत रहैत छलाह। हम देखने छी जे ओ कोना कोनो शब्दकेँ जर्मन, फ्रेंच, चीनी, ज़ापानी वा तिब्बातीमे की कहल जाइत अछि से शोधार्थीलोकनिकेँ बुझबैत रहैत छलाह। काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान पटना द्वारा हुनक सम्पादनमे *तर्क रहस्य* नामक पोथीक प्रकाशन 1979 इ. मे भेल।[2] *तर्क रहस्यक* पाण्डुलिपि नेवारी लिपिमे अछि। एहिमे चारि टा पूर्ण अध्याय अछि—प्रमाण संख्या विचार, प्रत्यक्षस्व भावलक्षण विचार, प्रत्यक्ष प्रभेद विचार आ विषयादिविचार। पाँचम अनुमान विचार अपूर्ण अछि। एकर मूल प्रति अप्राप्त अछि। अंतिम श्लोक सेहो अपूर्ण अछि। ई

ग्रंथ बौद्ध दर्शनसँ सम्बन्धित अछि आङ् गोर बिहारसँ भेटल अछि। एहि पाण्डुलिपिक बारह टा प्लेट अर्थात् फिल्म निगेटिव उपलब्ध अछि। एकटा प्लेटमे आठ वा नौ टा पृष्ठ अछि। प्रति पृष्ठपर सात टा पाँती अछि आ प्रति पाँतीमे प्रायः साठि टा अक्षर अछि। शास्त्रीजीक कहब छनि जे एकर लिपि प्राचीन मैथिली सन बूझि पड़ैछ। यद्यपि एहि ग्रंथक लेखकक विषयमे किछु स्पष्ट लिखल नहि अछि, मुदा एकरा पढ़िकऽ शास्त्रीजी कहैत छथि जे बौद्ध विद्वान कमलशील द्वारा ई ग्रथ लिखल गेल अछि। ग्रंथक भूमिका संस्कृत भाषामे अछि जाहिमे कहल गेल अछि जे महापंडित राहुल सांकृत्यायन कोनाकऽ कठिन-कठिन चारि बेर तिब्बतक यात्रा कऽ 'नगोर-तनग-पोस -खाङ् प्रभृतिक बौद्ध विहारक निरीक्षण कऽ हस्तलेख सभ अपना देश आनि बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी पटनामे रखलनि। शास्त्रीजी संस्थान आ संस्थानक पत्रिकाक नामक लेल संस्कृतमे क्रमशः बिहारोत्कल शोध समाज आ बिहारोत्कल शोध समाजस्य पत्रिकायाः शब्दक प्रयोग कयलनि अछि।[3]

जेना कि विद्वद्जन जनैत छथि जे महांपडित राहुल सांकृत्यायन 1929 सँ 1938 इस्वीक मध्य चारि बेर तिब्बतक दुर्गम यात्रा कऽ दुर्लभ पाण्डुलिपि अपना देश आनि बिहार रिसर्च सोसाइटी पटनामे रखलनि। बीसम शताब्दीक विश्व धरोहरक सूचीमे एहि ठामक राहुल संग्रहकेँ सर्वोत्कृष्ट मानल गेल अछि। तिब्बती लिपिमे लिखल प्रायः 9 हजार ग्रंथ, साढ़े दस सय बंडलमे, जे प्रायः सात लाख पृष्ठमे अछि, बान्हि कऽ राखल अछि। एहि तिब्बती लिपिक अतिरिक्त नेवारी, तिरहुता, सिंहली प्रभृति आओर लिपिमे लिखल कतेको ग्रंथ पाण्डुलिपि सभ आनल गेल जे फिल्म निगेटिव, ग्लास निगेटिव आ पोजीटिव प्लेटमे सेहो उपलब्ध अछि। एहि दुर्लभ संग्रहक डिजीटाइजेशन भऽ रहल अछि। तत्पश्चात् तिब्बती ग्रंथक हिन्दी अनुवादक प्रक्रिया प्रारंभ होयत। संस्कृत पाण्डुलिपिमेसँ कतोक ग्रंथ बिहार रिसर्च सोसाइटी आ काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित कयल गेल, मुदा जे बाँचल अछि तकर प्रकाशनक लेल सारनाथ केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय आ पटना संग्रहालयक बीच एकटा समझौता भेल अछि आ एकर प्रक्रिया चलि रहल अछि। एही संग्रहमेसँ *तर्क रहस्यक* दुलर्भ पाण्डुलिपि लऽ कऽ शास्त्रीजी कठिन परिश्रम कऽ एकर सम्पादन कयलनि। एहि ग्रंथक अध्ययन कयलासँ शास्त्रीजीक एक बौद्ध दार्शनिक स्वरूपक ज्ञान होइत अछि।

मैथिली साहित्य संस्थान पटनाक शोध पत्रिका *मिथिला भारतीक*[4] अंक एक भाग तीन-चारिमे शास्त्रीजीक शोध आलेख 'संबंध विमर्श' प्रकाशित भेल अछि जाहिमे हुनक दार्शनिक दृष्टिक उत्कृष्टता अछि। प्राच्य न्याय आ नव्यन्यायक चर्चा करैत संबंधक विस्तारसँ एहिमे चर्चा कयल गेल अछि। एहिमे संबंध भेद, परम्परा संबंध, वृत्ति नियामक संबंध, वृत्यनियमक संबंध आ ओकर प्रकार प्रभृतिपर गंभीर

अध्ययन कऽ तर्क आ दर्शनशास्त्रसँ सम्पुष्ट कयल गेल छैक। आलेखक अंतमे शास्त्रीजी कहैत छथि जे विशेष जिज्ञासाक शमनार्थ हमर 'बनर्थवाद विमर्श'क प्रतिक्षा करू जे अप्रकाशित अछि।[5] संभवतः ओहो नष्ट भऽ गेल।

शास्त्रीजीक दार्शनिक स्वरुपक दर्शन बिहार राष्ट्रभाषा पत्रिका सभमे प्रकाशित शोध आलेख सभमे देखबामे अबैछ।[6] एहि पत्रिकाक दसम वर्ष अंक एकमे 'आचार्य उदयन का आत्म तत्वार्थ विवेक' नामक शोध आलेखमे आत्मवादक मुख्य प्रतिष्ठापक न्यायाचार्य उदयनाचार्यक *आत्मतत्त्वार्थ विवेकक* गंभीर समीक्षा कयल गेल अछि। तहिना बारहम वर्षक अंक एकमे 'आचार्य उदयन और भूतचैतन्यावद' आ चौदहम वर्षक अंक एकमे 'भूतचैतन्यवाद और न्यायकुसुमांजलि' नामक आलेखमे शास्त्रीजी द्वारा विलक्षण दार्शनिक प्रतिभाक प्रदर्शन कयल गेल अछि।

आयुर्वेदक प्रकाण्ड पंडितक रूपमे शास्त्रीजी तखन समक्ष अबैत छथि जखन हम बिहार रिसर्च सोसाइटीक चालिसम आ एकतालिसम अंकमे 'प्राचीन तिब्बत में आयुर्वेद का प्रचार' नामक शोध आलेखकेँ पढ़ैत छी।[7] एहिमे शास्त्रीजी कहैत छथि जे भारतक बौद्ध पंडितलोकनि आठम शताब्दीमे बौद्धधर्मक प्रचार लेल तिब्बत गेल छलाह, जतऽ कतोक आयुर्वेदक ग्रंथ अपना सङ सेहो लऽ गेलाह। नागार्जुनक *जीवसूत्र* आ *अवभेषजकल्प, योगशतक,* बागूभट्टक *अष्टाङ्ग हृदय संहिता, वैद्यक सिद्धकार, महौषधिबल, आयुर्वेद सार-संग्रह* आ शलिहोत्रकृत *अश्ववैद्यक* प्रभृति कतोक ग्रंथक तिब्बती अनुवाद एखनो धरि तिब्बतमे सुरक्षित अछि। रसायन आ रसशास्त्रक सेहो बड़ बेसी ग्रंथ तिब्बतमे उपलब्ध अछि जकर स्रोत भारतहिकेँ मानल जाइत अछि। शास्त्रीजीक आयुर्वेद आधारित दुनू शोध आलेख पढ़लापर ई स्पष्ट होइत अछि जे संस्कृत-तिब्बती आ आन लिपि सभमे लिखल बौद्ध ग्रंथ प्रभृतिक गंभीर अध्ययन कऽ अपन आलेख प्रस्तुत कयने छथि। महात्माबुद्धक आयुर्वेद सम्बन्धी उपदेशक अतिरिक्त कतोक बौद्ध ग्रंथ सभक गहन अध्ययन कऽ अपन आलोचनाकेँ एहि रूपमे रखने छथि। तिब्बतक मूल आयुर्वेद ग्रंथ *ग्यूद् सीक* विस्तारसँ अध्ययन कऽ एहि आलेखमे शास्त्रीजी द्वारा समीक्षा कयल गेल अछि। *ग्यूद् सीक* मूलाधार संस्कृतक संबंधमे कहल जाइछ जे एकर उपदेष्टा स्वंय भगवान बुद्ध छलाह।

बिहार रिसर्च सोसाइटीक शोध पत्रिकाक बेयालिसम अंकमे प्राचीन चीनमे आयुर्वेदक प्रचार नामक हुनक बड़ विलक्षण शोध आलेख प्रकाशित भेल छल[8]। प्राचीन कालमे भारत आ चीनक बीच सांस्कृतिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्धक चर्चा विस्तारसँ कयल गेल अछि। भारतसँ आयुर्वेद शास्त्रक चीनमे प्रचार भेल आ दुनू देशक बीच मधुर सम्बन्धक लेल विविध संदर्भ ग्रंथ सभक चर्चा एहि आलेखमे कयल गेल। फाह्यान आ आयुर्वेद, ह्वेनसांग आ आयुर्वेदक अतिरिक्त आन-आन बौद्ध साहित्य सभामे आयुर्वेद शास्त्रक चर्चा विस्तारसँ कयल गेल अछि। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे एहि

आलेखक बड़ बेसी महत्त्व बढ़ि गेल अछि। हुनक कहब अछि जे चीन आ भारतक सांस्कृतिक मैत्रीक एकटा अटूट कड़ी दुनू देशक लोक द्वारा मैत्रीपूर्ण भावनासँ एक-दोसराक विशेषता सभक परस्पर आदान-प्रदान करब सेहो छल जाहिमे चिकित्सा विज्ञानक सेहो बड़ संबंध रहल अछि। हुनक कहब छलनि जे चीनी आयुर्वेदमे रोग निदान, द्रव्यगुणशास्त्र, नाड़ी परीक्षा आ मूत्र परीक्षाक कतेको सिद्धांत सभक बेसी ध्यान देल गेल[9]। एहि तरहेँ चीनी आ तिब्बती ग्रंथ सभक गहन अन्वेषण कऽ ओ चिकित्सा विज्ञानक विशेष ज्ञान प्राप्त कयलनि आ दोसरोकेँ ज्ञान बँटलनि। आयुर्वेदिक पत्रिका *धन्वतरि* मे ओ अपन चिकित्साशास्त्रक ज्ञानकेँ रखैत छलाह। हुनक शोध आलेख दार्शनिक दृष्टिसँ गर्भिणी बड़ लोकप्रिय भेल छल।

बिहार रिसर्च सोसाइटीक बुद्ध जयन्ती विशेषांक भाग-2 मे प्रकाशित 'वैशाली की ऐतिहासिक समृद्धि तथा उसके पतन का मूलकारण' मे शास्त्रीजी एकटा वरिष्ठ इतिहासकारक रूपमे अपनाकेँ स्थापित करैत छथि। वैशालीक उत्पत्ति, ओकर इतिहास, संस्कृति प्रभृतिकेँ वैदिक कालसँ लऽ कऽ गणतंत्र, बौद्धकालसँ गुप्तकाल धरिक विस्तारसँ चर्चा कयने छथि। एहि लेल वैदिक साहित्य, महाकाव्य, पुराण, बौद्ध ग्रंथ (पाली ओ संस्कृत), विदेशी पर्यटक फाहियान आ ह्वेनसांगक यात्रा वृत्तांत आ आन-आन दुर्लभ शोध ग्रंथ सभक संदर्भक रूमे उपयोग कयने छथि। लिच्छवि, वज्जि, वैशाली, बौद्ध धर्म, राजतंत्र, गणतंत्र प्रभृतिक उत्पत्ति, विस्तार आ पतनक विषयमे हुनक विचार पूर्ण रूपसँ मौलिक अछि आ मूल संदर्भपर आधारित अछि। लिच्छवि आ वैशाली, बौद्ध साहित्यमे वैशाली, वैशाली नामकरण, लिच्छवि परिवार, लिच्छविगणक बज्जिसंघ, गुप्त साम्राज्यमे वैशाली, कालिदास आ वैशाली नामकरण, लिच्छवि परिवार, लिच्छविगणक बज्जिसंघ, गुप्त साम्राज्यमे वैशाली, कालिदास आ वैशाली, भौगोलिक उत्कर्ष, फाहियान आ वैशाली, ह्वेनसांग आ वेशाली अ वैशालीक पतन आ ओकर कारण प्रभृतिपर विशेष कऽ चर्चा कल गेल अछि।[10]

'रतिपति भगत एण्ड हिज मैथिली गीत गोविंद' आ 'मैथिल कोकिल विद्यापति की प्रहेलिका लेखन कला' नामक दू टा शोध आलेख बिहार रिसर्च सोसाइटीक पत्रिकाक क्रमशः पैतालिसम आ चौवालिसम अंकमे प्रकाशित अछि। एहि दुनू आलेखमे शास्त्रीजी स्वयंकेँ एकटा वरिष्ठ साहित्यकारक रूपमे स्थापित करैत छथि। विद्यापतिक पदमे विदित वुझौअलिपर गहन अनुसंधान कऽ विस्तारसँ एहि आलेखमे शास्त्रीजी चर्चा कयने छथि जाहिमे कतोक संदर्भ सभक प्रयोग कयने छथि। तहिना जयदेवक संस्कृत ग्रंथ *गीत गोविंदक* अनुवाद कयनिहार रतिपति भगतक व्यक्तित्व आ कृतित्वक विस्तारसँ चर्चा शास्त्रीजी अपन आलेखमे कयने छथि। हुनक विचारसँ रतिपति भगतक गम्भीर कृति मैथिली साहित्यक विद्यापति आ गोविन्ददासक बीचक एकटा मजबूत कड़ी अछि। रतिपति खण्डवला राजवंशक राजा पुरुषोत्तम ठाकुरक समकालीन

छलाह।[11] दुर्लभ संदर्भ सभक आधारपर शास्त्रीजी एकटा गंभीर शोध आलेख तैयार कयने छथि जे साहित्यकार आ शोधार्थीलोकनिक लेल बड़ बेसी उपयोगी अछि। गीत गोविंदक पाण्डुलिपि तिरहुता लिपिमे अछि जे एखनहुँ बिहार रिसर्च सोसाइटीमे सुरक्षित अछि। ओकर संरक्षण आ डिजिटाइजेशन कार्य हालहिमे कराओल गेल अछि। सूचीकरण कार्य सेहो पं. भवनाथ झा द्वारा कराओल गेल अछि। एकटा वरिष्ठतम कविक रूपमे तँ ओ नित्य आर्यावर्त्तक चुटकुलानंदक चिट्ठीमे पाठकलोकनिक समक्ष अबैत छलाह। *मिथिला मिहिर* आ कतेको आन-आन पत्र पत्रिका सभमे हुनक लोकप्रिय कवितासभ नित्य प्रकाशित होइत रहैत छलनि।

शास्त्रीजी एकटा नीक पुराविद जकाँ 1971 इ. मे *आर्यावर्त्तमे* कुशी, जे मुजफ्फरपुर जिलाक काँटी थानांतर्गत एकटा पैघ पुरास्थल अछि, पर एकटा आलेख लिखलनि जाहिमे कुशीकेँ महात्मा बुद्धक निर्वाण स्थल घोषित कयने छथि। कुशी काँटी प्रखण्ड मुख्यालयसँ 15 किलोमीटर उत्तर-पश्चिममे आ काँटी रेलवे स्टेशनसँ प्रायः डेढ़ किलोमीटर दक्षिणमे अवस्थित अछि। एतऽ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, पटना सर्किल पटनाक तत्वावधानमे बी. के. शरणक निर्देशनमे खोदाइ भेल छल। एतऽ दूटा डीहक साक्ष्य अछि, उतरबरिया डीहक खोदाइ भेल अछि। ई प्रायः एक एकड़ क्षेत्रमे विस्तृत अछि आ प्रायः डेढ़ मीटर ऊँच अछि। एतऽसँ लाल मृदभाण्डक बट्टा, हॉडी छिद्रयुक्त बर्त्तनक खपटा प्रभृति भेटल अछि। एतऽ शुंग-कुषाण कालक संस्कृतिक अनुमान अछि। शास्त्रीजी एहि पुरावशेष सभक आधारपर एहि स्थलकेँ भगवान बुद्धक परिनिर्वाण स्थल कहैत छलाह। हुनक एहि विचारक समर्थन करैत डॉ. अशोक कुमार सिन्हा मिथिला भारतीमे कहैत छथि जे कुशीनगर (उत्तर प्रेदश) सँ एखन धरि रुम्मिनदेई (शाक्यमुनि बुद्धक उत्पन्न स्थल) आ निगली सागरक कनक मुनि, प्रत्येक बुद्धक नामपर बनल स्तूप जकाँ अशोक कालक कानो लघु स्तम्भ नहि भेटल अछि, जे भेटबाक चाहि।[12] दिनांक- 30.12.87 केँ कुशीस्थलक निरीक्षण करबाक लेल अयबाक बेर गाँधी सेतुपर कार दुर्घटनामे शास्त्रीजी गंभीर रूपसँ घायल भऽ गेलाह आ स्थायी रूपसँ शारीरिक दृष्टिसँ लाचार भऽ गेलाह। एहिमे हुनक जेठ बालकक संगहि पुरातत्वक निदेशक डॉ. प्रकाश चन्द्र प्रसाद सेहो गंभीर रूपसँ घायल भेलाह। 1960 इस्वीक *मिथिला-मिहिरक* दसम अंकमे 'मिथिलाक्षरक विकास' नामक आलेखसभमे शास्त्रीजी मिथिलाक्षरमे लिखल गेल कतोक अभिलेख सभक चर्चा कयने छथि जाहिसँ स्पष्ट होइछ जे ओ कतेक पैघ पुराविद् छलाह।

शास्त्रीजीक सरस्वती साधनासँ अभिभूत भऽ कतेको संस्थान द्वारा हुनका सम्मानित कयल गेलनि। बिहार राजभाषा विभाग द्वारा 1984 मे वरिष्ठ हिन्दी सेवी सम्मान, संस्कृत संजीवन समाज द्वारा सम्मान आ चेतना समिति पटना द्वारा 1988 इ.मे शास्त्रीजीकेँ सम्मातनित कयल गेलनि।

एवम्प्रकारेँ देखैत छी जे शास्त्रीजी जीवन पर्यन्त सरस्वती साधनामे लीन रहलाह। शिक्षा ग्रहण करबाक भूत हुनकापर एहन सवार छलनि जे 1987 इ. बहत्तरिम वर्षमे पटना ला कालेजमे नमांकनक लेल आवेदन जमाकऽ देलनि। ओहि समय ओ राजकीय संस्कृत महाविद्यालय पटनामे सम्मानित प्राध्यापकक रूपमे प्रतिनियुक्त छलाह। शास्त्रीजी अपन अंतिम कृति *कृत्सार समुच्चयक* संस्कृत टीका जे प्रायः पाँच सय पृष्ठमे छल, प्रकाशित नहि करबा सकलाह। प्रायः ओ पाण्डुलिपि नष्ट भऽ गेल। अपन मृत्युसँ पूर्व 400 पृष्ठक मिथिलाक्षरमे हस्तलिखित *पदवाक्य रत्नाकरक* पाण्डुलिपि प्रकाशन लेल रखने छलाह, मुदा 29 जून 2000कैँ ओ स्वर्गवासी भऽ गेलाह। आब ओ पाण्डुलिपि बिहार रिसर्च सोसाइटीमे राखल अछि। हमरा आग्रहपर हुनक जेठ बालक एहि पाण्डुलिपिके सोसाइटीकैँ दान कऽ देलनि। आब हुनक एकटा रचना *काक* (लक्षण) *कारिकावलीक* पाण्डुलिपि, जे मैथिलीमे अछि, हुनका घरमे बाँचल अछि। हुनक बेसी रचना 1975 इ. क बाढ़िमे नष्ट भऽ गेलनि। बादक जे किछु छल आब सेहो नहि अछि। हुनक जेठ बालक कुलानंद झा कहैत छथि जे हुनक जीवन आ रहन-सहन बड़ साधारण छल। भोजनो अपने बनबैत छला 1987 इ.क दुर्घटनाक बाद दुनू पयर अकाजक भऽ गेलनि, तँ मात्र पढ़ाइ-लिखाइमे जीवन पर्यन्त लागल रहलाह। आर्थिक दयनीयताक कारणेँ कोनो पोथी नहि प्रकाशित करा सकलाह आ ओ सभटा नष्ट भऽ गेल। अपना मुँहसँ कोनो बेटाकैँ किछु नहि कहैत छलाह, किछु कहबाक रहनि तँ *मिथिला मिहिरमे* कविता प्रकाशित कऽ पढ़बाक लेल दऽ दैत छलाह। *उत्तर बिहार* नामक हिन्दी सप्ताहिक पत्रिकामे 'गजब गाम चिकनौटा' नामक कविता लीखि अपन गाम चिकनौटापर व्यंग्य कयने छलाह। *नरनारायण* पत्रिकामे वात्स्यायनक *कामसूत्रक* हिन्दी टीका धारावाहिक प्रकाशित करौने छलाह आ *कल्याणमे* 'देवी के शक्तियों के विभिन्न श्रोतों का रहस्य' नामक आलेख प्रकाशित भेल छलनि।[13] *सारस्वती सुषमामे* 'शब्दब्रह्मतत्त्व' नामक आलेख प्रकाशित भेल छलनि।

श्री कुलानंद झा कहैत छथि जे शास्त्रीजीसँ लोक लिपि आ टीपणि पढ़यबाक लेल अबैत छलाह। एक बेर महावीर मंदिरसँ आचार्य किशोर कुणाल अपन गुरु आचार्य सीताराम चतुर्वेदीक संग सुन्दर रामायणक रचना करबाक निमित्त आग्रह करबाक लेल आयल छलाह। शास्त्रीजी किछु दिन सुंदर रामायणक रचना कयलनि पुनः छोड़ि देलनि। ओकर पाण्डुलिपि एखनो ओ सम्हारि कऽ रखने छथि। कुलानंद झा कहैत छथि जे ओ लिच्छवी एवं तिरहुता लिपिक अध्ययन विषयपर पी-एच. डी. लेल पटना विश्वविद्यालयमे पंजीकरण करयने रहथि जकर मार्गदर्शन पिताजी करैत छलाह। मैथिली अकादमी पत्रिकामे आचार्य सुमनजीक पुस्तक *दत्तवतीक* समीक्षा कयने छला। 1979 मे शास्त्रीजी *काक लक्ष्ण कारिकावली* नामक पोथीक रचना

मैथिलीमे कयलनि, मुदा प्रकाशित नहि करा सकलाह। काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान पटना द्वारा *प्रमाणवर्तिक भाष्य* नामक पाण्डुलिपिक सम्पादन कार्य कयलनि।

शास्त्रीजीक भातिज श्री प्रभाकर झा कहैत छथि जे 1956 सँ 1978 धरि *आर्यावर्त्त* आ *इंडियन नेशनक* सम्पादकीयमे हुनक विशेष योगदान रहैत छलनि जाहिमे तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्थापर निस्सन चोट रहैत छलैक। शास्त्रीजी *मिथिलामोदक* सम्पादन सेहो किछु दिन कयलनि।

एवंप्रकारेँ उपलब्ध साक्ष्य आ परिवारिक सूत्र सभसँ ज्ञात होइत अछि जे शास्त्रीजी बहुआयामी व्यक्तिक धनी छलाह आ हुनका कृतित्वपर गंभीर अनुसंधानक आवश्यकता अछि। ओ कहने छलाह जे हुनका मृत्युक बाद जँ पचास टा शोधर्थी शोध करत तथापि सामग्री कम नहि पड़तैक। ओ ईहो कहने छलाह जे जखन मरब तखन सभ मोन पाड़त, आ आइ हमरालोकनि हुनका मोन पाड़ि रहल छी। आवश्यकता अछि जे हुनक सभटा रचनाकेँ एकत्र कऽ एकठाम प्रकाशन हो आ ओहिपर गंभीरतासँ अनुसंधान कार्य कयल जाय।

संदर्भ-संकेत :

1. राजेश्वर झा, मिथिलाक्षरक उद्‌भव ओ विकास, पटना, 1971; *मिथिला मिहिर*, पटना 11, 18 आ 25 सितम्बर, 2 आ 9 अक्टूबर, 13, 20 आ 27 नवम्बर आ 4 आ 11 दिसम्बर 1960.
2. *तर्करहस्य*, सं. आचार्य परमानंदन शास्त्री, काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान, पटना, 1979
3. तत्रैव XXX-XXI
4. *मिथिला भारती*, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, अंक-1 भाग-3-4 पृ. 180-192.
5. तत्रैव, पृ0 192.
6. *परिषद पत्रिका*, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद पटना, अंक 10, 12 आ 14
7. *जर्नल ऑफ दि बिहार रिसर्च सोसाइटी*, पटना 40 आ 41.
8. तत्रैव, 42, पृ. 47-71.
9. तत्रैव।
10. तत्रैव, बुद्धजयन्ती विशेषांक, अंक -2
11. तत्रैव, 45, 326.
12. *मिथिला भारती*, भाग-1 *(N. S.)* पृ. 64.
13. शास्त्रीजीक जेठ बालक कुलानंद झासँ सूचित

मैथिली लिपिक अनुसंधान ओ परमानन्द झा शास्त्री

भैरव लाल दास

तिरहुता किंवा मिथिलाक्षरक अत्यंत विशिष्ट एवं प्राचीन इतिहास अछि। एहि लिपिक रचना मनुष्यक विभिन्न अंग, आकार एवम् वैदिक कर्मकांडमे प्रयुक्त याज्ञिक मंडप, त्रिकोण ओ चतुष्कोणक आधारपर भेल। ई तीरभुक्ति वा तिरहुत नामक भू-भागक लिपि अछि। वैज्ञानिक आधारपर स्थापित अछि जे मानव बास हेतु मिथिलाक पर्यावरण लगभग 9 हजार वर्ष पूर्वहि अनुकूल भऽ गेल रहैक। शतपथ ब्राह्मणसँ जनतब भेटैत अछि जे 1000 सँ 600 इ. पूर्व आर्यक एक दल माधव विदेह एवं हुनक पुरोहित रहुगणक नेतृत्वमे सरस्वती नदीक तटसँ चलि सदानीरा नदी पार कऽ पूब दिशामे अयलाह आ वेश्वानर अनलक सहयोगसँ पंकिल वनाच्छादित जन शून्य क्षेत्रकेँ वास योग्य बनौलनि।[1] द्वारा संभव अछि ई दल अपना संग सिंधुघाटी सभ्यता, संस्कृत भाषा एवं लिपि सेहो अनने होय। हालमे चेचर, रामचौरा आ आन पुरातात्विक उत्खननसँ एहिठामक बास-इतिहासक पुरातनता सिद्ध होइत अछि। बलिराजगढ़, जयमंगलागढ़, कटरा, पाण्ड अथवा पाण्डव स्थानक अतिरिक्त चिरान्द, चेचर, लौरिया नन्दनगढ़ अन्तीचक प्रभृति नवपाषाणकालीन अथवा ताहूसँ पुरान स्थल सभक आधारपर मिथिलामे मानव-वासक इतिहास तेसर-चारिम शताब्दी ई.पू. धरि चलि जाइत अछि। एतबे नहि, अन्हराठाढ़ी, कोपागढ़ जनकडीह, रहिका, सरिसवपाही, सुगौना, उच्चैठ, बेनीपट्टी, देवकुलीडीह, पिंगीडीह, जलोखर, इनयडीह, डिलाही, भीमाडीह, कंशूडीह आदिक सम्यक उत्खननसँ मिथिलाक आर्य-पूर्व पुरातनता स्पष्टतासँ सिद्ध कयल जा सकैत अछि।[2]

1970 इ. मे छपरा जिलाक चिरांदक उत्खननमे डॉ. भगवती शरण वर्माकेँ बरहसिंघाक सींघसँ बनल हथौड़ी, सूआ, छेनी, रुखान, पाथरक लॉकेट, चुड़ी आदि विविध प्रकारक दैनिक जीवनसँ सम्बद्ध नव-प्रस्तरयुगीन पदार्थ, माटिक बासन परहक चित्रकारी एवं आन-आन कतिपय वस्तु, जकर काल 2000 ई. पूर्वसँ कम नहि भऽ सकैछ, उत्तर बिहारक इतिहासमे एक क्रान्ति उत्पन्न कऽ देलक अछि। संस्कृत

वाङ्मयसँ ज्ञात होइछ जे विदेह-राज जनकक ओतऽ कुरु-पांचालसँ विद्वानलोकनि अबैत छलाह तथा सतत ज्ञानक प्रसंगमे वाद-विवाद होइत रहैत छल। *वृहदारण्यक* उपनिषद तथा *शतपथ ब्राहाणक* रचनाक श्रेय सेहो विदेह भूमिएकेँ तँ देल जाइछ, किन्तु जखन लिपिक इतिहासक प्रश्न उठैछ, तँ आश्चर्यक विषय थिक, कहल जाइछ जे ओकरा अपन स्वतंत्र लिपि आ भाषाक अभाव छल, जखन कि पाटलिपुत्रक मौर्यवंशी राजा अशोकक' जनिकर सम्बन्ध स्वतः विदेहक पिप्पलीकाननसँ छल, लेख तथा ई.सं. पूर्वक चारिम शताब्दीसँ लऽ ई.सं. तेसर शताब्दी धरिक कतिपय मोहर एवं अभिलेखसँ प्रतीत होइछ जे ओहि समय एहिदेशमे दुइगोट लिपि प्रचलित छल।[3]

महाभारतमे लिच्छवीक क्षेत्रिय व्रात्यकेँ भगवान बुद्ध द्वारा वज्जीक संज्ञा देल गेल अछि जकर अर्थ होइछ घुमक्कड़। विदेह राज्यक स्थापनासँ पहिने विदेह व्रात्य नामक आदिवासी निवास करैत छलाह। व्रात्य लोकनिक संपूर्ण उत्तरी भारतमे प्रभाव छल आ हुनक संस्कृति, साहित्य, भाषा एवं लिपि लौकिक छल। *वृहदारण्य* उपनिषदक तेसर-चारिम अध्यायमे वर्णित जनक-याज्ञवल्क्य संवाद एवम् दोसर अध्यायमे वार्णित याज्ञवल्क्य–मैत्रेयी संवादमे जाहि रूपसँ सारगर्भित तर्क प्रणाली लिखित अछि ओहिसँ स्वभावतः अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे शतपथकालीन विदेह सर्वांग संपूर्ण विकसित राज्य छल जकर स्वतंत्र 'वैदेही भाषा' एवं स्वतंत्र 'वैदेही लिपि' सेहो छल। एहि तथ्यक संपुष्टि बोद्धधर्मक प्रसिद्ध ग्रंथ *ललित विस्तारसँ* होइत अछि जकर चीनी अनुवाद 308 इ. मे भेल छल। एहि ग्रंथमे 64 लिपिक सूची अछि जाहिमे पूर्व विदेह लिपिक चर्चा सेहो अछि। एहन अंदाज लगाओल जाइत अछि जे पूर्वोत्तर भारतीय, दक्षिणी नेपाल क्षेत्रक मैथिली, बांग्ला, असमी एवं उड़िया लिपिक विकास संभवतः एहि विदेह लिपिसँ भेल। भाषा एवं लिपिक अध्ययनक दृष्टिकोणसँ काल विभाजनमे आदि भारतीय आर्य भाषा काल--1500 ई. पू.सँ 500 इ. धरि आ एहि अवधिक मुख्य भाषा वैदिक एवं संस्कृत, मध्य भारतीय आर्यभाषा काल 500 ई.पू. सँ 1000 इ. धरि आ एहि अवधिक मुख्य भाषा पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश एवं आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल 1000 इ. सँ अद्यावधि एवं एकर भाषा सभ हिन्दी, गुजराती, मराठी, बांग्ला आदि अछि।

पूर्वी क्षेत्रीय लिपिसँ तिरहुता लिपिक विकास छठम शताब्दीमे आरंभ भेल। ई पूर्व क्षेत्रीय लिपि गुप्तकालीन लिपिसँ मिलैत-जुलैत छल। गुप्त शासन कालक लिपि स्वंय प्राचीन ब्राह्मी लिपिक विकसित रूप छल जकर विकास मध्यवर्ती शृंखला कुषाणकालीन लिपिमे कहल जा सकैत अछि। सातम शताब्दीमे एहि लिपिमे लिखल गेल सामग्री जापानक होरियुजी मठसँ भेटल छल।[4] तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर लिपिक क्रमिक विकास क्षेत्रीयताक आधारपर रूप ग्रहण कयलक। विद्वानक मत छनि जे 500 इ. सँ 900 इ. धरि तंत्रक प्रभावसँ ई कलात्मक रूप ग्रहण कयलक। फर्ग्युहर

500 इ. सँ. 900 इ. धरिक युगकेँ शाक्त युग मानैत छथि। हुनका अनुसारेँ 900 सँ 1300 इ. धरिक युगमे मिथिलामे अनेक साहित्यिक रचना भेल। अतएव तिरहुता लिपिक निर्माण एहि युगमे भेल जाहिपर तंत्रक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि।[5]

तिरहुता लिपिक क्रमिक इतिहासक अनुसंधान लेल विभिन्न शासनकालक शिलालेख एवं दानपत्रक अध्ययन आवश्यक अछि। नाराणपालक भागलपुर दानपत्रक लिपि, श्रीचन्द्र रामपाल दानपत्रक लिपि, महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्रक लिपि, भोजवर्मनक वेलवा दानपत्रक लिपि, लक्ष्मण सेनक तरपणदिघी दानपत्रक लिपि तथा पक्षधर मिश्र (ल.सं. 1344-1464)क *विष्णुपुराण*क लिपिक तुलनात्मक अध्ययनसँ स्पष्ट होइत अछि जे तिरहुता लिपिक उपयोग विद्वानलोकनि विभिन्न ग्रंथक रचनाक लेल कयलनि। वेलवा दानपत्रक लिपिक प्रसंगमे राधागोविन्दि बसाकक मत छनि जे एहि दानपत्रक लिपि 11म शताब्दीक उत्तर लिपि अछि आ रामपाल दानपत्रक लिपिक प्रंसगमे हुनकर धारण छनि जे ई 11-12 म शताब्दीक उत्तरी भारतक पूर्वी भागक लिपि अछि।[6] स्वयं आर. डी. बनर्जी तिरहुताकेँ बांग्ला लिपिक पूर्ववर्ती रूप मानैत छथि। ई लिपि तिरहुताक अतिरिक्त अन्य कोनो लिपि नहि भऽ सकैत अछि।[7] हर प्रसाद शास्त्रीक ग्रंथ *बौद्ध गान ओ दोहा*क तालपत्र पांडुलिपिमे तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायनक अनुसार तिब्बतमे संग्रहित कुल्कल्ला सावनक तालपत्रमे तिरहुताक बेसी अक्षर अछि। कटरा ताम्रलेख, महिपाल प्रथमक समयकेँ इमादपुर मूर्तिलेख, विग्रहपाल द्वितीयक समयक नौलागढ़ एवं बनागाँव अभिलेख, 11म शताब्दीक पनिचोभ ताम्रपत्र अभिलेख, आसी शिलालेख, तिलकेश्वर गढ़ एवं खोजपुर अभिलेख, भागीरथपुर शिलालेख आदिमे उल्लिखित लिपि मिथिलाक्षर अछि। *वर्णरत्नाकर*क पांडुलिपि एवं विद्यापति ठाकुरक *श्रीमद्भागवत* महापुराणक पांडुलिपि एहि दृष्टिसँ विशेष उल्लेखनीय अछि। महाभारतक कर्णपर्वक प्रतिलिपि (ल. सं. 327), ओईनवार नरपति नरसिंह कर्णदाहक अभिलेख आदि मिथिलाक्षरमे अछि। रामपालकेँ पराजित कऽ कर्णाट वंशक नान्यदेव मिथिलाक भू-भाग अर्जित कयलनि। नेपालक सिमरॉवगढ़ अभिलेख (1097 इ.) मे एकर उल्लेख अछि। एहिमे नान्यदेव द्वारा बनाओल गेल किछु अन्य भवनक सेहो उल्लेख अछि।

शुद्ध तिरहुताक उदाहरण कर्णाट नरेश नान्यदेव (1097 इ.) क मंत्री श्रीधर कायस्थक अंधराठाढ़ी अभिलेखमे देखल जाइछ। विष्णुक प्रस्तर मूर्तिक नीचा भागमे उत्कीर्ण अभिलेख तिरहुता लिपिमे वार्णित अछि जे एकर स्थापना नान्यदेवक महामंत्री श्रीधर दास द्वारा कयल गेल। भीठभगवानपुरक लक्ष्मीनारायणक प्रस्तर मूर्तिपर तिरहुता लिपिमे नान्यदेवक पिताक नाम मल्लदेव उल्लिखित अछि। शिलालेखमे एहिसँ पहिने नान्यदेव एवं हुनक परिवारजनक उल्लेख नहि भेटैत अछि।[8]

जयनगर अभिलेखमे वार्णित अछि जे मंडनपालक शासनकाल 1104-26 इ., पालपालक शासनकाल 1126-61 इ. एवं गोविन्दपालक शासनकाल 1161-99 इ. अछि। पाल वंशक शासककेँ इख्तियारुद्दीन मोहम्मद बख्तियार खिलजी द्वारा परास्त कल गेल।[9] भागीरथपुर (पण्डौल) अभिलेखमे तिरहुता लिपिमे संस्कृत भाषामे वार्णित अछि। कृष्णकान्त मिश्र एहि अभिलेखकेँ 1513 इ.क मानैत छथि।

सिद्धिः स्नुषा हरिनरायणः क्षितिपतेर्गति क्ष्माभृतां
बधूर्न्नुपतिमण्डली महितराम भूमीपतेः
द्विजोत्तम सुखप्रदा नृपति कंसनारायण
प्रवीरजजनी मुदा मठमचीकरत् सुन्दरम ॥(1)
दानैर्य्या दलयाम्वभूव जगतां दारिद्र्यमत्युत्कटं
कीर्त्यायाः सुन्दरतरान् लोकाँश्चकारायुतान
किंचोच्चै र्व्विनयान्नयाच्चवशतां नीतायायाबान्धवाः
सेयं विश्वविक्षणोज्जवलगुणग्रामा मठंनिर्ममे ॥ (2)[10]

आगाँ विद्यापति रचित *पुरुषपरीक्षा*मे एकर उल्लेख आयल अछि। श्री पक्षधर मिश्र एवं चंदा झा द्वारा लिखित पांडुलिपि तिरहुता लिपिमे उपलब्ध अछि। दुर्लभ मिथिलाक्षर पाण्डुलिपिक अनुसंधान, संकलन, संपादन, प्रकाशन आदि कार्यमे बलदेव मिश्र, विष्णुलाल शास्त्री, जयकान्त मिश्र (तिरहुता लिपि), पंडित राजेश्वर झा (मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास 1972), जगन्नाथ मिश्र (मैथिली वर्णमाला) क योगदान विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। विदेशी विद्वानमे कोलब्रुक (1801) मार्टिन(1840), कैंपवेल (1874), पैलेन (1875), वींस (1878), ग्रियर्सन (1880) तथा केलॉग (1893) प्रमुख छथि। एकर अतिरिक्त सुनीति कुमार चटर्जी, गंगानाथ झा, बलदेव मिश्र, सुधाकर झा शास्त्री, सुभद्र झा प्रभृति विद्वान सभ एहि क्षेत्रमे अपन गवेषणा द्वारा एकर अध्ययन एवं अनुशीलनकेँ आगाँ बढ़ौलनि। गौरी शंकर ओझा द्वारा लिखित *भारतीय प्राचीन लिपिमाला*, सुनीति कुमार चटर्जीक पुस्तक *ओरिजिन एंड डेवलपमेट ऑफ बंगाली लैंग्वेज* (लन्दन 1921) तथा *कंपरेटिव फिलॉलॉजी विथ स्पेशल रेफरेंस टू बंगाली डायलेक्ट्स* तिरहुता लिपिपर विशेष प्रकाश दैत अछि। सुधाकर झा शास्त्रीक शोध प्रबंध 'इंडो-आर्यन लैंग्वेज विथ स्पेशल रेफरेंस टू मैथिली' (लन्दन 1933) मे मिथिलाक्षरक महत्ता दर्शाओल गेल अछि। सुभद्र झाक शोधकार्य 'फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्विज' (पटना 1941) मिथिलाक्षरक उत्पत्तिक प्रमाणिक तथ्य प्रस्तुत करैत अछि। दीनबन्धु झाक *मिथिला भाषा विद्योत्तन* (1945) तथा *मिथिला भाषा कोष* (1950) एहि लिपिक विस्तृत अध्ययनक क्रममे सफल प्रयास अछि। पंडित विष्णु लाल शास्त्रीकेँ प्राचीन तालपत्रपर तिरहुता लिपि एवं संस्कृत

भाषामे पाण्डुलिपि भेटलनि आ एकर संग्रह ओ मइ, 1942 मे बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटनामे कयलनि। एहिमे वाचस्पति मिश्रक *द्वैतानिमाया*, *शुद्धिचिन्तामणि* एवं *महादानानिमाया* एवं बल्लालसेन द्वारा रचित *अद्भुतसागर* आदि अछि।[11]

मधुबनी जिलाक ननौर गामक श्रीकान्त झासँ के. पी जायसवाल एवं ए. बनर्जी शास्त्रीकेँ चण्डेश्वर रचित *शुद्धिरत्नाकर* प्राप्त भेलनि भवतोष भट्टाचार्य द्वारा वर्णित अछि जे एहिमे 436 पृष्ठ अछि।[12] ए. बनर्जी शास्त्रीकेँ दुइटा पाण्डुलिपि पृथक् भेटलनि। पूजा, मूर्त्ति, आरंभ, योग, गुरु आ साधना तंत्रपर आधारित एहि ग्रंथकेँ सर जॉन वुडरॉफ द्वारा अगमनुसंधान स्मृति कहल गेल।[13] तिरहुता लिपिमे प्राचीन ग्रंथ *तंत्रतत्व* अछि जे सम्प्रति लंदनमे संरक्षित अछि। एकर अतिरिक्त *काली विलास तंत्र*, *सतक्रमणि रूपण*, *पादुका पंचक* एवं *महानिर्वाण तंत्रम्* आदि तिरहुता लिपिमे अछि।

तिरहुताक अनुसंधानमे आचार्यक योगदान

बिहार रिसर्च सोसाइटीक जर्नल्स ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटीमे आचार्य परमानन्द शास्त्री जयदेव द्वारा लिखित *गीत गोविन्दपर* विस्तृत अनुशीलन प्रकाशित अछि। शास्त्रीजी लिखैत छथि जे जयदेव द्वारा लिखित *गीत गोविन्दक* मैथिली अनुवाद रतिपति भगत द्वारा कयल गेल जे मैथिली साहित्यक लेल बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। उपर्युक्त पांडुलिपि मैथिली साहित्यक सभसँ पुरान पांडुलिपिमेसँ एक अछि। एकर खोज बिहार रिसर्च सोसाइटीक पंडित स्व. विष्णुलाल शास्त्री द्वारा कयल गेल। मैथिली हैंडमेड पेपर, वैसाख वदी, 1723-24 ए. डी. संस्कृतमे अछि।[14] *गौरी स्वयंवर* नाटकक रचयिता कान्हाराम दासक पिता छलथिन हलधर सिंह दास, वर्ष 1842 इ. क[15] रतिपति भगतक ई रचना विद्यापति एवं गोविन्द दासक बीचक महत्त्वपूर्ण शृंखला अछि। कवि महाराजा पुरुषोत्तम ठाकुर दरभंगा राजक दरबारी छलाह। कवि द्वारा रुक्मिनी देवीक पतिक प्रशंसा कयल गेल अछि। महाहोपाध्याय मुकुन्द झा बक्शीक अनुसार पुरुषोत्तम ठाकुर(1622-23) इ. मे मिथिलाक राजा छलाह आ सात वर्ष धरि राजा रहलाह।[16] हिनका एकटा बालक छलनि जिनकर नाम गुणकर छलनि आ हिनक विधवा रुक्मिनी देवी छलथिन। प्रथम भनिता अछि–

यदुकुल तिलक कृष्ण जिओ राजा
पुनमति रूकुमिनी देवी समाजा।।
परस पुन्य पुरवत सबे आसा।
सेवक करण रतीपति भासा।।

एहिमे उल्लिखित अछि गीत गोविन्द टीका : ग्रंथकार–रतिपति भगत, लिपिकार–हलधर सिंह दास, रचनाकाल-लिपिकाल 1130, पृष्ठ संख्या–61, भाषा संस्कृत, मैथिली, लिपि, मैथिली, बीआरएस।[17] महापंडित राहुल सांकृत्यायन तिब्बतसँ *तर्करहस्यक* पांडुलिपि अनलनि। ई पांडुलिपि तिरहुता लिपिक एक प्रभेद नेबाड़ी लिपिमे छल। शास्त्रीजीकेँ एकर संपादनक भार देल गेलनि। शास्त्रीजीक संपादनमे *तर्करहस्य* के. पी. जायसवाल शोध संस्थान, पटना द्वारा प्रकाशित भेल। तिरहुता लिपिसँ संबंधित शोध आलेख शास्त्रीजी द्वारा *मिथिला भारती* एवं *जर्नल्स ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटीमे* सेहो प्रकाशित भेल अछि। तिरहुता लिपिक अनुसंधान एवं विकासपर शास्त्रीजी द्वारा *मिथिला मिहिरमे* शृंखलाबद्व ढंगसँ दसटा आलेख प्रकाशित भेल। 11, 19 एवं 25 सितम्बर, 2, 9 अक्टूबर, 13, 20, 27 नवम्बर एवं 4 एवं 11 दिसम्बर 1960 इ. क अंकमे शास्त्रीजीक आलेखसँ तिरहुता लिपिक अनुसंधानक नवीन आयाम खुजल।[18]

शास्त्रीजी तिरहुतामे कतिपय ग्रंथक रचना सेहो कयलनि दुर्भाग्यवश ओ रचना सभ प्रकाशित नहि भऽ सकल। एहि ग्रंथमे *कृतसार समुच्यक* संस्कृत टीका 500 पृष्ठक पांडुलिपि अछि। दोसर रचना *पदवाक्य रत्नाकरक* पांडुलिपि पटना स्थित हुनका घरमे बिहार रिसर्च सोसाइटीक डॉ. शिवकुमार मिश्र तकलनि। शास्त्रीजीक पुत्र श्री कुलानन्द झा द्वारा *पदवाक्य रत्नाकरक* उपरोक्त पांडुलिपि 2 अगस्त, 2015 कैँ बिहार रिसर्च सोसाइटीकेँ दान देल गेल। वर्ष 1960क सितम्बरसँ दिसम्बर मास धरि शास्त्रीजीक कुल दसटा आलेख 'मिथिलाक्षरक विकास' शीर्षकसँ *मिथिला मिहिर,* पटनामे प्रकाशित भेल। उपर्युक्त शोध आलेख द्वारा शास्त्रीजी फड़िछौलनि जे मिथिलाक्षरक विकास कोना भेल। उपर्युक्त आलेखसँ मिथिलाक सांस्कृतिक विकासक जानकारी सेहो भेटैत अछि। शास्त्रीजी लिखैत छथि जे ओइनवार वांशक शासनकालमे मिथिलाक सांस्कृतिक स्थिरीकरण भऽ चुकल छल। राजा हरिसिंहदेव मिथिला छोड़बापर बाध्य भेलाह आ ओइनी ग्रामोपार्जक ओयन ठाकुरक वंशज एवं राजपंडित कामेश्वर ठाकुरकेँ राजा बनाओल गेल जाहि वंशमे शिवसिंह सेहो भेलाह। ओइनवार वंशक शासनकालमे *कीर्त्तिलता, कीर्त्ति पताका* लिखल गेल एवं पंजी व्यवस्था आरंभ भेल। एहि शासनकालक धर्माध्यक्ष वर्धमान गरूड़ध्वजक अभिलेख अछि।[19] सुमंत्री कर्माध्यक्षक हैहट्टदेवी स्थापना अभिलेख उपलब्ध अछि। *दण्ड विवेक* सन सर्वांगपूर्ण 'पेनल कोड'क पोथी लिखनिहार बेलौंचमूलक वर्धमानक ओ अभिलेख मटियाहीमे भेटल अछि, जाहिमे लिखल अछि जे–

जातो वंशे विल्व पंचाभिधाने
धर्माध्यक्षो वर्धमानो भवेशात

देवस्याग्रे देवयष्टि र्ध्वजाग्रा
रूढ़ेकृत्वास्थापयद् वैनतेयम् ।।

नरसिंहदेवक कन्दाहा अभिलेख, जाहिमे भवसिंह, हरसिंह आ तीन ओइनवार मिथिलेशक चर्चा अछि, एहि अभिलेखक अनुसार मन्दिर स्थापक बेलौंचे वंशक पण्डित वंशधरनाथ छलाह। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे वर्धमानक समयसँ मिथिलामे धर्माध्यक्षक (आधुनिक मुख्य न्यायाधीशक) पद वंशानुक्रमे बेलौँचे कुलमे आबि रहल अछि। अभिलेख पाठ निम्न रूपेँ अछि–

पृथ्वीपति द्विजवरोभव (सिंह आ)
सीदाशी विवेन्द्रवपुरुज्ज्वलकीर्तिराशिः
तस्यात्मजः सकल कृत्य विचार धीरो वीरे (ख) भूव वि....

शास्त्रीजीक अनुसार भागीरथपुर अभिलेख लक्ष्मण संवत् 394 क अछि। अभिलेखमे राजा कंसनारायणक उल्लेख अछि। मिथिलाक्षरक रूपरेखापर एहि अभिलेखसँ अत्यधिक प्रकाश पड़ैत अछि। शास्त्रीजीक अनुसार कर्णाटवंशक संस्थापक महेश ठाकुर उच्चकोटिक कवि छलाह आ महेश ठाकुरक गीत सभ उपलब्ध अछि। मधुरवाणीश्वर मंदिर अभिलेखसँ महिला समाजक धर्मनिष्ठापर प्रकाश पड़ैत अछि। कल्पदान, महीरूह दान प्रभृति महादानक जाहि परंपराक प्रमाण महामत्तक चण्डेश्वरक *दान रत्नाकर* आदि ग्रन्थ सभसँ भेटैछ, जे एहू काल धरि अक्षुण्ण रहल। शास्त्रीजीक अनुसार विदेश्वरस्थान मंदिरक अभिलेख मिथिलाक्षरक विकासकेँ जनबा लेल अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अछि।[20] अपन मित्र राधाकृष्ण चौधरीक पोथी *सेलेकट इन्सिक्रिप्शन ऑफ बिहारक* भूमिकाक पृष्ठ 9 पर उल्लिखित सम्राट् आदित्यसेनक देवघरक शिलालेखक लिपि मिथिलाक्षर होयबाक चर्चा शास्त्रीजी कयलनि।[21] शास्त्रीक अनुसारे 665 इ.मे मिथिलाक्षरक प्रचार भऽ चुकल छल। एकर पुष्टि पालवंशक रामगया अभिलेख, राजा महेन्द्रपालक आठम राज्य वर्षमे अभिलिखित शासन अभिलेखसँ स्पष्ट होइत अछि। एहि सम्राटक दिघवा दुबौली (जिला छपरा) तेसर कालक दानपत्रक जे वर्णमाला भेटैछ ताहिमे सावर्ण्यगोत्र कौथुमशाखी सब्रह्मचारी भट्ट यक्ष्मासाराक कुंभ संक्रान्ति कालक चर्चा अछि।[22] रामपुर, मंगरेसँ प्राप्त बौद्ध प्रतिमामे मिथिलाक्षरक स्पष्ट अभिलेख देखबामे अबैछ। (परमानन्द शास्त्री, मिथिलाक्षरक विकास, *मिथिल मिहिर*, 13 नवम्बर 1960)

शास्त्रीजी द्वारा विदेश्वर स्थान महादेव मंदिरसँ प्राप्त अभिलेखक चर्चा कयल गेल अछि जाहिमे लिखल अछि जे जगमोहनक निर्माण ओही महादेवक स्वप्नादेशसँ भेल छल।

आचार्य परमानन्द शास्त्री तिरहुताक अतिक्ति आनो भाषा एवं लिपिक विद्वान छलाह। तिब्बती चिकित्सा शास्त्रक मूल *ग्रंथ ग्युद सीक* मूलाधार संस्कृत चतुस्तन्त्रक संबंधमे शास्त्रीजी लिखलनि जे एकर उपदेष्टा भगवान बुद्ध छलाह। भगवान बुद्ध अपना शिष्य सभकैं जे चिकित्सा विज्ञान संबधी उपदेश देने छलथिन, एकरा हुनकर शिष्य सभ चारि तंत्रमे लिपिबद्ध केलखिन। एहि ग्रंथकैं बौद्ध समाजमे परम मान्यता भेटलाक कारणेँ एकर अनुवाद तिब्बती ग्रंथ *ग्युद सीकैं* सेहो तिब्बतमे सर्वोपरि मान्यता भटेल। *ग्युद सीक* चारि भागमेसँ प्रथम दू भागमे क्रमशः रोगाधिष्ठान आ रोगायतनपर मीमांसा कयल गेल अछि, शेष दू भागमे यथाक्रम भैषज चिकित्सा तथा शास्त्र कर्मक विधान अछि। पुस्तकक तिब्बती भाषामे भाष्य सेहो लिखल गेल छल जाहिमे 'सड. स ग्याद्-ग्या-त्सो' द्वारा लिखत *वैदूर्य पोड.पो* नामक भाष्य चिकित्सा विज्ञानक चूड़ान्त ज्ञान प्राप्त करबाक इच्छा रखनिहार छात्र पढ़ैत छलाह। एहि भाष्यक ब्लॉक प्रिंट कॉपी इण्डिया ऑफिस, लंदनक पुस्तकालयमे संरक्षित अछि जाहिमे चारि खंडमे क्रमशः 40, 283, 463, एवं 250 पृष्ठ अछि। एहि क्रममे परमानन्द शास्त्री 'मोनियर विलियम-बुद्धिज्म', तकाकुसु, स्वर्ण प्रभास, लासा ऐण्ड इट्स मिस्ट्रीज, झीमर का हिन्दू मेडीसिन, चरक संहिता आदि ग्रंथक अध्ययन एवं अनुशीलन कयलनि।[23]

संदर्भ-संकेत :

1. शतपथ ब्राहाण, सं., ए. वेनर, लंदन, 1885, पृष्ठ 11-20
2. विजय कुमार चौधरी, *आर्कियोलॉजी ऑफ मिथिला,* मिथिला, रिसर्च हेरिटेज, प्राइड आइडेन्टिटी, पृष्ठ-33
3. राजेश्वर झा, *मिथिलाक्षरक उदव ओ विकास,* 1971, पृष्ठ 108, कालिका प्रेस, आर्यकुमार रोड, पटना
4. पवन मिश्रा, *मिथिलाक्षर का अनुशीलन, मिथिला संस्कृति एवं परम्परा* (पंडित राजेश्वर ठाकुर अभिनंदन ग्रंथ) विजय कुमार ठाकुर (सं.), 2001, जानकी प्रकाशन, पटना
5. जे.एन.फर्क्युहर, *दि रिलिजियस क्वेस्ट ऑफ इंडिया,* दिल्ली, 1962, पृष्ठ-167
6. *एपिग्राफिका इंडिका,* भाग XII, पृष्ठ-37
7. सर आशुतोष मुखर्जी सिलवर जुबली अंक, कलकत्ता, 1962, पृष्ठ-212
8. B Sahai, *The inscriptions of Bihar*, 1983, Ramanand Vidya Bhawan, J3 / 227, DDA Flats, Kalkaji, New Delhi . page 15.
9. जेबीआरएस वॉल्युम संख्या- XVI-June 19955, part 2, *jaynagar Image inscription* by D.C. Sircar
10. *Bhagirathpur excavations and a 15th century inscriptions*, Krishna kanta Mishra, JBRS Vol.XL- part-I, March, 1954

11. JBRS XXVIII, part I, page 221
12. JBRS XXIII, part-I page 139
13. JBRS Vol. XXVII, part-I page-61, Two Mithila Mss. on Tantra and Yoga by A. Banerji Shastri
14. मिद पुस्तकीकरण वीयर सं. श्री हलधर सिंह दासस्य लिखित्वा इति श्री गीत गोविन्द 1130 साल
15. *History of Maithili Literature*, part I, Page-336
16. *Mithila Bhashamaya ltithas*, Pp-115-22
17. Ratipati Bhagat and his Maithili Gita Govinda byAcharya sri Parmanandan Shastri The JBRS, Vol XLV, Jan-Dec 1959, parts I-IV, A.S. Altekar Memorial Volume
18. राजेश्वर झा, पृष्ठ-च (प्राक्क्थन)
19. परमानंदन शास्त्री, मिथिलाक्षरक विकास, *मिथिला मिहिर,* 27 नवम्बर, 1960
20. परमानन्द शास्त्री, मिथिलाक्षरक विकास, *मिथिला मिहिर,* 11 दिसम्बर , 1960
21. *जर्नल्स ऑफ बंगाल एशियाटिक सोसाइटी,* वर्ष 52, पृष्ठ-1990-91
22. परमानन्द शास्त्री, मिथिलाक्षरक विकास, *मिथिला मिहिर,* 13 नवम्बर, 1960
23. आचार्य परमानन्दन शास्त्री, *प्राचीन तिब्बती में आयुर्वेद का प्रचार* : Vol.XLI, part-I JBRS March, 1955, Page 217

अनुक्रम

मैथिली साहित्य सर्जक-प्रतिष्ठापक

मोहन-विकल-परमानन्द-ब्रजमोहन

सम्पादक

वीणा ठाकुर



साहित्य अकादेमी